7

द्वन्द समास-पूर्वपरनिपात विशेष कार्य और एकशेष

बहुव्रीहि समास से पर समास का भेद है द्वन्द। ''चार्थेद्वन्द:'' यह समास विधायक सूत्र है। यह समास पदार्थ प्रधान है। उभयपदयो: अर्थ: उभयपदार्थ (दोनों पदों का अर्थ)। उभय (दोनों) पदों के अर्थ प्रधान है जिसमें वह उभय पदार्थ प्रधान है। जैसे:- राम: च कृष्ण: च (राम और कृष्ण) इस विग्रह में रामकृष्णौ। यहाँ समस्यमान इन दोनों पदों में दोनों का ही प्राधान्य है। अत: रामकृष्णौ गच्छत: ऐसा कहने पर राम और कृष्ण दोनों का ही गमनक्रिया में ही प्राधान्य से अन्वय है। द्वन्द में पूर्व और पद निपात विधायक सूत्रों का यहाँ आलोचना की जा रही है।

और यह द्वन्द समास इतरेतरद्वन्द और समाहारद्वन्द दो भागों में विभक्त है। और समाहारद्वन्द में एकवद्भाव विधायक कुछ सूत्र हैं। उनकी यहाँ आलोचना की जा रही है। छन्द परि आलोचन अवसर पर उसके अपवाद से एकशेषविधान भी यहाँ आलोचना की जा रही है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- द्वन्दसमास विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- पूर्वपर निपातविधायक सूत्रों को जान पाने में;
- द्वन्द के अपवाद एकशेष को जान पाने में;
- द्वन्द में विशेषकार्य विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- द्वन्द अपवाद भूत एक शेष सूत्रों को जान पाने में।

टिप्पणियाँ

(7.1) ''चार्थेद्वन्दः'' (2.2.29)

सूत्रार्थ–अनेक सुबन्त को च अर्थ में वर्तमान विकल्प से समास होता है, और वह छन्द संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से द्वन्द समास होता है। इस सूत्र में चार्थे पद सप्तमी एकवचनान्त है। ''द्वन्दः'' यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''विभाषा'', ये दो अधिकृत सूत्र है। ''अनेकमन्यपदार्थे'' इससे अनेकम् और ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' उससे सुप् की अनुवृत्ति हो रही है। चस्थ अर्थः चार्थः (चका अर्थ) तस्मिन् चार्थे इसमें षष्ठी तत्पुरुषसमास है। सुप् यहां पर तदन्तविधि में अनेकम् इस अव्यय से अनेकं सुबन्तम् प्राप्त होता है। अनेक सुबन्त को च अर्थ में वर्तमान को विकल्प से समास होता है और वह समास द्वन्द संज्ञक होता है यही सूत्र का अर्थ है।

च अर्थो को भट्टोनिदीक्षित ने सिद्धान्त कौमुदी में कहा है-समुदाय, अन्वयय, इतरेतरयोग और समाहार। ये चार प्रकार होते है। परस्पर निरपेक्ष अनेक का एक में अन्वय समुच्चय कहलाता है। अन्यतर का आनुषङ्गिक में अन्वय होने पर अन्वायच कहलाता है। मिलितों का अन्वयः इतरेतर योग कहलाता है। समूह को समाहार कहा जाता है।

परस्पर निरपेक्षों का अनेक पदों में जहाँ एक क्रियावद में अन्वय होता है वहाँ समुच्चय चार्थः है। जैसे–इश्वरं गुरुं च भजस्व (ईश्वर और गुरु को भजो)। ईश्वर को भजो गुरु को भजो यही तात्पर्य है।

अन्यतर एकपद का जहाँ अप्रधानात्व से क्रियान्वय हो और अन्य का प्रधानत्व से चार्थ हो अन्वाचयः होता है। जैसे–भिक्षामट गां चानय (भिक्षाभट, गौः सङ्गता चेत् तामपि आनय इति तात्पर्यम्। भिक्षामट गायों के साथ उसको भी लाओ यही तात्पर्य है)

परस्पर आक्षेपित समुदित एक क्रियावह में अन्वय हो जहाँ वहाँ चार्थ इतरेतरयोग होता है। इततरेतरयोग नाम परस्पर साहित्य का है। जैसेः–घवश्च खदिरश्च धवरवदिरौ इति। यहाँ इतरेतर योग बोधन के लिए चकार द्वय का प्रयोग हुआ है।

एकीभूय (एकीकरण) क्रिया में अन्वयः जहाँ-जहाँ हो चार्थ समाहार है। यथा संज्ञा च परिभाषा च इति संज्ञा परिभाषम्। (संज्ञा और परिभाषा) समुच्चय में और अन्वाचय में असामर्थ्य से समास नहीं होता है। यथा ईश्वरं गुरुं च भजस्व (गुरु और ईश्वर को भजो) यहाँ ईश्वर और गुरु शब्दों में परस्पर निरपेक्षता में आवृत्त होने पर भजस्व क्रिया पद में क्रम से अन्वय से परस्पर अन्वय के अीााव से सामर्थ्य नहीं है। इसी प्रकार भिक्षामट गां च आनय यहाँ पर भिक्षा और गो पद में परस्पर निरपेक्ष में क्रमशः अटन में और आनयन शब्द से अन्वय से परस्पर अन्वय अभाव से सामथ्र्यर्ध नहीं है। किन्त इतरेतरयोग का और सभाहार के चार्थ के सामर्थ्यसत्व से समास होता है।

एवं इस सूत्र में चार्थशब्द से इतरेतरयोग का और समाहार का ग्रहण हुआ है। एवं सूत्र का अर्थ है–अनेक सुबन्तों को चार्थ में इतरेतरयोग में और समाहार में वर्तमान विकल्प से समास प्राप्त होता है और वह समास द्वन्द संज्ञक होता है।

उदाहरण–इतरेतर योग का चार्थ में उदाहरण है धवखदिरों तथाहि-धवश्च खदिरश्च इस लौकिक विग्रह में धव सुखदिर सु इस अलौकिक विग्रह में इतरेतर योग अर्थ में विद्यमान ध व सु का और खदिर सु का सुबन्त का प्रस्तुत सूत्र (चार्थे द्वन्दः) से द्वन्द समास होता है। इसके बाद समुदाय के प्रातिपदिकत्व से सुप् के दो सु प्रत्ययों का लोप होने पर धवरवदिर शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद ''परवल्लिङ्गं द्वन्दतत्पुरुषयोः'' इस सूत्र से उत्तरपद के पुल्लिंग में विद्यमान होने से धवरवदिरशब्द का पुल्लिंग में विद्यमान होने से इसक बाद प्रथमा द्विवचन में औ प्रत्यय होने पर प्रक्रियाकार्य में धवरवदिरौ रूप बनता है।

समाहार के चार्थत्व में उदाहरण है–संज्ञा परिभाषम्। क्योंकि संज्ञा च परिभाषा च इस लौकिक विग्रह में संज्ञा सु परिभाषा सु इस अलौकिक विग्रह में समाहार अर्थ में विद्यमान संज्ञा सु का और परिभाषा सु सुबन्त का प्रस्तुत सूत्र से द्वन्द समास होता है। इसके बाद समुदाय की प्रातिपदिकत्व से सुप् के दोनों सु प्रत्ययों का लोप होने पर संज्ञा परिभाषा शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद ''स नपुंसकम्'' इस सूत्र से संज्ञा परिभाषा शब्द के नपुंसकत्व होने से ह्रस्वत्व निष्पन्न होने से संज्ञापरिभाषा शब्द से सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में संज्ञा परिभाषम् रूप बना।

(7.2) ''राजदन्तादिषु परम्'' (2.2.31)

सूत्रार्थ–राजदन्तादि में पूर्व प्रयोग अर्हं आर्हं परे होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से पर निपात होता है। इस सूत्र में राजदन्तादिषु पद सप्तमीबहुवचनान्त है। परम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्वम् पद की अनुवृत्ति आती है। प्रभुज्यते यह क्रियापद लिया गया है। राजदन्त शब्द आदिः येषां (राजदत्त शब्द हैं आदि में जिसके) ते राजदन्तादयः, तेषु राजदत्तादिषु इस तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि समास होता है। राजदन्तादय (राजदत्तादि) राजदन्तगण में पठित शब्द हैं।

और सूत्र का अर्थ है–राजदत्तादि में गण पठित शब्दों में समास होने पर पूर्वप्रयोग अर्हं पदं पर का पर (बाद में) प्रयोग होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है–राजदन्तः। दन्तानां राजा इस लौकिक विग्रह में दन्त आम् राजन् सु इस अलौकिक विग्रह में ''षष्ठी'' इस सूत्र से षष्ठीतत्पुरुष समास होता है। इसके बाद ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इस समास विधायक सूत्र में षष्ठी के प्रथमानिर्दित्व से उसके बोध्य का दन्त आम की उपसर्जन संज्ञा होने पर ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्वनिपात प्राप्त होता है। तब राजदन्तादिगणपठित प्रोक्त सूत्र से दत्त आम का पर निपात होने पर राजन् सु दन्त आम् होता है। इसके बाद ''कृतद्धितसमासाश्च'' इस सूत्र से राजन् सु दन्त आम् समास का प्रातिपदिकत्व होने से ''सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'' इस सूत्र से सुप् के सु प्रत्यय के और आम प्रत्यय का समास का प्रातिपदिकत्व होने से ''सुपोधातुप्रातिपदिकयोः'' इस सूत्र से सुप् के सु प्रत्यय का और आम् प्रत्यय का लोप होने पर राजन् दन्त होता है। तब ''न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य'' इससे राजन् के नकार का लोप होने पर निष्पन्न राजदत्त से प्रातिपदिक से प्रथमा के एकवचन विवक्षा में सु प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में राजदन्तः रूप बना।

(7.2.1) 'धर्मादिष्वनियमः'' (वार्तिकम्)

वार्त्तिकार्थ–धर्मादि में समस्थमान का अन्यतर का पूर्वनिपात अथवा पर निपात विकल्प से होता है।

वार्तिक व्याख्या–यह वार्तिक धर्माहिगण में पठित शब्दों के समास में अन्यतर का पूर्वनिपात बताता है। वस्तुत तो यह गणसूत्र है। इस वार्तिक का अर्थ होता है–धर्मादिगण में पठित शब्दों का समास में पूर्वनिपात में और निपात में नियम नहीं है।

उदाहरण–अर्थ धर्मौ धर्मार्थौ इत्यादि इस वार्तिक का उदाहरण है। धर्मश्च अर्थश्च इस लौकिकविग्रह में धर्म सु अर्थ सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द समास होता है। इसके बाद ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' इससे समास का प्रातिपदिकत्व होने से ''सुपोधातुप्रातिपदिकयो:'' इससे सुप् के सु प्रत्ययों का लोप होने पर धर्म अर्थ होता है। इसके बाद ''अजाद्यन्तम्'' इस सूत्र से अजादि अर्थशब्द का पूर्वनिपात होने पर प्रोक्त वार्तिक से ध र्मशब्द के पाक्षिक में पूर्वनिपात होने पर सवर्णदीर्घ में निष्पन्न धर्मार्थशब्द से प्रथमाद्विवचन में और प्रत्यय होने पर धर्माथौं रूप होता है। अन्य पक्ष में अर्थ शब्द का पूर्व निपात होने पर अर्थध र्मौ रूप बना।

(7.3) ''द्वन्दे घि''

सूत्रार्थ–द्वन्द में घिसंज्ञक का पूर्व प्रयोग होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से पूर्व निपात होता है। इस सूत्र में द्वन्दे यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। घि लुप्त प्रथमा एकवचनान्त परद है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्वम् इस द्वितीया एकवचनान्त क्रिया विशेषण पद की अनुवृत्ति आती है। प्रभुज्यते यह क्रिया पद किया गया है। ''शैषोध्थसखि'' इस सूत्र से विहित सखिशब्द को छोड़कर ह्रस्व इकार का और ह्रस्व उकार के घि संज्ञक का ही घि पद से ग्रहण किया गया है। और सूत्र का अर्थ है–(द्वन्दे घिसंज्ञक पूर्व प्रयुज्यते) द्वन्द समास में घिसंज्ञक पूर्व पद का प्रयोग किया गया है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है–हरिहरौ। हरिश्च हरश्च इस लौकिक विग्रह में हरि सु हर सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द समास होने पर प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर हरि हर इस स्थिति में प्रोक्त सूत्र से इकारान्तत्व से घि संज्ञक हरिशब्द का पूर्वनिपात में निष्पन्न हरिहर शब्द से प्रथमा द्विवचन में औ प्रत्यय होने पर हरिहरौ रूप बना।

पाठगत प्रश्न-1

1. ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
2. ''चार्था:'' इस भवन्ति?

3. समुच्चय: नाम किसका और उदाहरण क्या है?
4. अन्वाचय: नाम किसका और उसका उदाहरण कौन सा है?
5. इतरेतर योग नाम किसका है और उसका उदाहरण क्या है?
6. समाहार नाम क्या है? और उदाहरण क्या है?
7. समुच्चय अन्वाचयार्थ में समास कहा नहीं होता है?
8. राजदन्तादिषु परम्'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
9. ''राजदत्तादिषु परम्'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
10. ''धर्मादिष्वनियम:'' इस वार्तिक का उदाहरण क्या है?
11. ''धर्मादिष्वनियम:'' इस वार्तिक का उदाहरण क्या है?
12. ''द्वन्दे घि'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
13. हरिहरौ यहाँ हरिशब्द का पूर्वनिपात कैसे हुआ है?

(7.3.1) ''अनेकप्राप्तावेकत्र नियमोऽनियम: शेषे'' (वार्तिकम्)

वार्तिकार्थ:–अनेक घिसंज्ञक पदों का द्वन्दप्राप्त: होने पर एक घि संज्ञक का पूर्व निपात होता है, इस घिसंज्ञक विषय में पूर्व का निपात का विकल्प होता है।

वार्तिक व्याख्या:–इस वार्तिक को ''अल्पाच्तरम्'' सूत्र का महाभाष्य में पठित है। इस वार्तिक से अनेक घिसंज्ञक समास होने से पूर्वनिपात का नियम है।

इस वार्तिक में अनेकप्राप्तौ एकत्र नियम: अनियम: शेषे पदच्छेद:। अनेक प्राप्तौ यह सप्तम्यन्त पद है। एकत्र यह सप्तम्यर्थ बोधक अव्यय है। नियम: अनियम: ये दोनों पर प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्वम् द्वितीया एकवचनान्त का क्रियाविशेषण पद की अनुवृत्ति आती है। ''द्वन्दे घि'' सूत्र की अनुवृत्ति आती है। और वार्तिक का अर्थ है–अनेक घिसंज्ञक द्वन्द प्राप्त होने पर एक घिसंज्ञक पद में पूर्वनिपात का नियम है अन्यत्र घिसंज्ञक में पूर्वनिपात का नियम नहीं है।''

उदाहरण:–इस वार्तिक का उदाहरण है–हरिगुरुहरा:, हरिहरमुख:। हरिश्च हरश्च गुरुश्च इस लौकिक विग्रह में हरि सु हर सु गुरु सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से इतरेतर द्वन्द समास होता है। ''कृत्तद्धितसामासाश्च'' सूत्र से समास का प्रातिपदित्व होने से ''सुपो धातु प्रातिपदिकयो:'' इससे सुप् की तीन सु प्रत्ययों का लोप होने पर हरि हर गुरु होता है। इसके बाद प्रोक्त वार्तिक सहाय से ''द्वन्दे घि'' इस सूत्र से इकारान्तत्व घिसंज्ञक हरिशब्द का पूर्वनिपात होने पर द्वितीय घिसंज्ञक गुरुशब्द का विकल्प से पूर्वनिपात के अभाव से सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न हरिहरगुरु शब्द से प्रथमा बहुवचन में जम् प्रत्यय होने पर हरिहर

टिप्पणियाँ

गुरुव: रूप हुआ। द्वितीय घिसंज्ञक का पूर्व निपात की विकल्पता से उसके पक्ष में निष्पन्न हरि गुरु शब्द से जस् प्रत्यय होने पर हरिगुरुहरा: रूप बना।

(7.4) ''अजाद्यदन्तम्'' (2.2.33)

सूत्रार्थ–द्वन्द में जो अजादि और अदत्त हो उसका पूर्व प्रयोग होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से पूर्वनिपात होता है। एकपदात्मक इस सूत्र में ''अजाद्यदन्तम्'' प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''द्वन्दे घि'' इस सूत्र से द्वन्दे पद की अनुवृत्ति होती है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्व द्वितीया एकवचात्त क्रिया विशेषण पद की अनुवृत्ति आती है। ''प्रयुज्यते'' यह क्रियापद लिया गया है। अच् आदि: यस्य तह (अच् है आदि में जिसके) अजादि में बहुव्रीहि समास होता है। अत: अन्त: यस्थ तद् अदन्तम् यह बहुव्रीहि समास है। और सूत्र का अर्थ है–''द्वन्द में अजादि और अदत्त का पूर्व प्रयोग होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है–ईशकृष्णौ। ईशश्च कृष्णश्च इस लौकिक विग्रह में ईश सु कृष्ण सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द समास होता है। इसके बाद ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' इससे समास का प्रातिपदिकत्व होने से ''सुपोधातुप्रातिपदिकयो:'' इससे सुप् के दो सु प्रत्ययों का लोप होने पर ईश कृष्ण होता है। इसके बाद ईश शब्द के आदि में ईकार है अत: वह अजादि है। इसी प्रकार अन्त में अकार है। अत: ईशब्द अदत्त है। एवं प्रोक्त सूत्र से अजादि अदत्त क ईशशब्द का पूर्व निपात होने पर निष्पन्न ईशकृष्णशब्द से प्रथमा द्विवचन में औ प्रत्यय होने पर ईशकृष्णौ रूप बना।

(7.5) ''अल्पाच्तरम्''

सूत्रार्थ–द्वन्द में अल्पाच्तरं (अल्प अच् वाला) पद का पूर्व प्रयोग होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से पूर्व निपात होता है। एकपदात्मक इस सूत्र में अल्पाच्तरम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''द्वन्दे घि'' इससे द्वन्दे पद की अनुवृत्ति आती है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्व द्वितीया एकवचनान्त क्रियाविशेषण पद की अनुवृत्ति होती है। प्रयुज्यते क्रियापद लिया गया है। अल्प: अच् यस्थ तद् अल्पाच् यहाँ बहुव्रीहि समास है। अल्पाच् एवं अल्पाच्तरम् यहाँ स्वार्थ में तरप् प्रत्यय होता है। अत एव निपातन से कुत्व का अभाव होता है। और सूत्र का अर्थ है–द्वन्द समास में अल्पाच् विशिष्ट पद का पूर्व प्रयोग होता है।''

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है–शिवकेशवौ। शिवश्च केशवश्च इस लौकिकविग्रह में शिव सु केशव सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द समास होता है। इसके बाद ''कृन्तद्धित समासाश्च'' इससे समास का प्रातिपदित्व होने से ''सुबोध ातुप्रातिपदिकयो:'' इससे दो सु प्रत्ययों का लोप होने पर शिव केशव रूप होता है। यहाँ शिव के दो अचों का और केशव के तीन अचों का एकत्व होता है। प्रोक्त सूत्र (अल्पाच्तरम्) से

शिव के अल्पअच् का पूर्व निपात होने पर निष्पन्न शिवकेशव शब्द से प्रथमाद्विवचन में औ प्रत्यय होने पर शिवकेशवौ रूप बना।

(7.5.1) ''ऋतु नक्षत्राणां समाक्षराणामानुपूर्व्येण'' (वार्तिकम्)

वार्तिकार्य–समानसंख्या अचों के ऋतुओं के और नक्षत्रों का द्वन्द समास में आनुपूर्व्ये से कम से निपात होता है।

वार्तिक व्याख्या–इस वार्तिक से क्रम से निपात होता है इस वार्तिक में ऋतुनक्षत्राणां समाक्षराणाम् आनुपूर्व्येण यह पदच्छेद है।

ऋतुनक्षत्राणां समाक्षराणाम् ये दो पद षष्ठी बहुवचनान्त पद है। आनुपूर्व्येण यह तृतीया एकवचनात्त पद है। ''द्वन्दे घि'' इससे ''द्वन्दे'' पद की अनुवृत्ति आती है। यहाँ अक्षरशब्द से अच् का ग्रहण होता है। समानि अक्षराणि येषां तानि समाक्षराणि तेषाम् बहुव्रीहि। समसंख्यांकाच्कानाम् यह तात्पर्य है। इस वार्तिक का अर्थ होता है-समानसंख्या अचों वाले ऋतु और नक्षत्रों का द्वन्द में आनुपूर्व्येव से क्रम से निपात कहना चाहिए (होना चाहिए)।

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण है हेमन्तशिशिखसत्ता: हेमन्तश्च शिशिरश्च वसन्तश्च इस लौकिक विग्रह में हेमन्त सु शिशिर सु वसन्त सु इस अलौकिक विग्रह में हेमन्त सु शिशिर सु वसन्त सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द सामस में प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर हेमन्त शिशिर बसन्त स्थिति में प्रोक्त वार्तिक से हेमन्त शिशिर बसन्तों के समानअच् होने से उनमें आनुपूर्व्य का लोकप्रसिद्धत्व से हेमन्त शब्द का पूर्व निपात होने पर इसके बाद शिशिर शब्द का पूर्व निपात होता है। इसके बाद सर्वसंयोग होने पर इसके बाद संर्वसंयोग होने पर निष्पन्न हेमन्त शिशिर वसन्त शब्द से प्रथम बहुवचन में जस् प्रत्यय होने पर हेमन्त शिशिरसत्ता: रूप होता है। उसी प्रकार नक्षत्र वाचक होने से निपात का उदाहरण है।–कृत्तिकारोहिण्ये।

(7.5.2) ''लघ्वहारं पूर्वम्'' (वार्तिकम्)

वार्तिकार्य–लघु अक्षर पद का द्वन्द में पूर्व प्रयोग होता है।

वार्तिक व्याख्या–इस वार्तिक से पूर्वनिपात होता है। इस वार्तिक में लघ्वक्षरम् पूर्वम् ये दो पद प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''द्वन्दे घि'' इससे द्वन्दे पद की अनुवृत्ति होती है। यहाँ अक्षर शब्द से अच् का ग्रहण किया गया है। लघु अक्षरम् अच् यस्य तत् (लघु अक्षर है जिसका) लघ्वक्षरम् यहाँ बहुव्रीहि समास होता है। ह्रस्व से अच् वर्ण विशिष्ट पद तपत्पर्य है। और वार्तिक का अर्थ है–लघु अक्षर पद द्वन्द समास में पूर्व प्रयोग होता है।

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण है–कुशकाशम्। कुशश्च काशश्च इस लौकिक विग्रह में कुश सु काश सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से समाहार द्वन्द समास होता है। इसके बाद ''कृत्तद्धितसमाश्च'' इससे समास का प्रातिपदिकत्व से ''सुपोधातुप्रातिपदिकयो:'' इससे सुप् के दो सु प्रत्ययों का लोप होने पर कुश काश स्थिति में प्रोक्त वार्तिक से कुशशब्द

के लघु अच् से उसका पूर्व निपात होता है। इसके बाद सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न कुशकाश शब्द का एकवत् भाव होने पर नपुंसकत्व होने पर इसके बाद सु प्रत्यय होने पर कुशकाशम् रूप बना।

पाठगत प्रश्न-2

14. ''अनेकप्राप्तावेकत्र नियमोऽनियम: शेषे'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?
15. ''अनेकप्राप्तावेकत्र नियमोऽनियम: शेषे'' इस वार्तिक का उदाहरण क्या है?
16. ''अजाद्यदन्तम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
17. ''अजाद्यदन्तम्'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
18. ''अल्पाच्तरम्'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
19. ''अल्पाच्तरम्'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
20. ''ऋतुनक्षत्राणां समासराणामानुपूर्व्येण'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?
21. ''ऋतुनक्षत्राणां समासराणामानुपूर्व्येण'' इस वार्तिक का उदाहरण क्या है?
22. ''लघ्वक्षरं पूर्वम्'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?
23. ''लघ्वक्षरं पूर्वम्'' इस वार्तिक का उदाहरण क्या है?

(6.5.3) ''अभ्यर्हितं च''

वार्तिकार्य–अभ्यहित (अभि:अर्हित) पद को द्वन्द समास में पूर्व प्रयोग होता है।

वार्तिक व्याख्या–इस वार्तिक से पूर्वनिपात होता है। इस वार्तिक में अभ्यर्हितम् पद प्रथमा एकवचनान्त पद है। 'च' अव्यय पद है। ''द्वन्देधि'' इससे द्वन्दे पद की अनुवृत्ति होती है। अभ्यहितम् नाम पूज्य। च पद से पूर्व का ग्रहण किया गया है। और वार्तिक का अर्थ होता है–''अभ्यर्हित पद को द्वन्द समास में पूर्व प्रयोग होता है।''

उदाहरण–''वासुदेवार्जुनौ'' यह इस वार्तिक का उदाहरण है। वासुदेवश्च अर्जुनश्च। लौकिक विग्रह में वासुदेव सु अर्जुन सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेशब्द:'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द समास होने पर प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर वासुदेव अर्जुन होता है। इसके बाद ''अल्पाच्तरम्'' इस अल्पाक्षर विशिष्ट अर्जुन शब्द का पूर्व निपात होने पर उसको बांधकर प्रोक्त वार्तिक से अभ्यर्हित का वासुदेव शब्द का पूर्वनिपात होता है। इसके बाद सवर्णदीर्घ होने पर निष्पन्न वासुदेवार्जुन शब्द से पुल्लिंग होने पर प्रथमाद्विवचन में औ प्रत्यय होने पर वासुदेवार्जुनौ रूप बना।

(7.5.4) ''वर्णानामानुपूर्व्येण'' (वार्तिक)

वार्तिकार्य–द्वन्द में वर्णों का आनुपूर्व्य से पूर्व निपात कहना चाहिए।

वार्तिक व्याख्या–इस वार्तिक से पूर्वनिपात होता है। इस वार्तिक में वर्णानाम् षष्ठी बहुवचनान्त पद है। आनुपूर्व्येण यह तृतीया एकवचनान्त पद है। ''द्वन्दे घि'' इससे ''द्वन्दे'' पद की अनुवृत्ति आती है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्वम् की अनुवृत्ति होती है। वर्णशब्द से प्रसिद्ध ब्राह्मण आदि चार ग्रहण किये गये हैं। और वार्तिक का अर्थ है–''द्वन्दे समास में वर्णों के आनुपूर्व्य से पूर्वनिपात होना चाहिए।''

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण है–ब्राह्मणक्षत्रियविट्शुद्राः। ब्राह्मश्च क्षत्रियश्च विट् च शुद्रश्च इस लौकिक विग्रह में श्रामण सु क्षत्रिय सु विश सु शुद्र सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्दसमास होता है। इसके बाद समास का ''कृत्तद्धित्तसमासाश्च'' इससे प्रातिपदिकत्व होने से ''सुपो धातु प्रातिपदिकयोः इससे प्रातिपदिक अवयव के तीनों सु प्रत्ययों का लोप होने पर ब्राह्मण विश शुद्र होता है। तब प्रोक्त वार्तिक से वर्णों के आनुपूर्व्ये से पूर्व निपात होने पर प्रक्रिया कार्य में निष्पन्न ब्राह्मणक्षत्रिय विट शुद्र शब्द से पुल्लिंग प्रथमाविभक्ति बहुवचन में जस् प्रत्यय होने पर ब्राह्मणक्षत्रियबिट्शुद्राः रूप बनता है।

(7.5.5) ''भ्रातुर्ज्यायिसः'' (वार्तिक)

वार्तिकार्य–द्वन्द में ज्येष्ठभ्रातृवाचक पद का पूर्वनिपात कहना चाहिए।

वार्तिक व्याख्या–इस वार्तिक से पूर्वनिपात होता है। इस वार्तिक में भ्रातुः और ज्यायसः ये पद षष्ठी एक वचनान्त पद हैं।

''द्वन्दे घि'' इससे ''द्वन्दे'' पद की अनुवृत्ति आती है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्वम् की अनुवृत्ति आती है। और इस वार्तिक का अर्थ आता है–''द्वन्द समास में ज्येष्ठ भातृवाचक पद का पूर्वनिपात कहना चाहिए।''

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण है युधिष्ठरार्जुनौ। युधिष्ठरश्च अर्जुनश्च इस लौकिक विग्रह में युधिष्ठर सु अर्जुन सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द समास होता है। इसके बाद समास का प्रातिपदिकत्व होने से सुप् का लोप होने पर युधिष्ठर अर्जुन होने पर ''अल्पाच्तरम्'' इससे अल्पाक्षर विशिष्ट अर्जुनशब्द का पूर्वनिपात होने उसको बांधकर प्रोक्त वार्तिक से ज्येष्ठभ्रातृवाचक युधिष्ठर शब्द का पूर्व निपात होता है। इसके बाद सवर्णदीर्घ होने पर निष्पन्न युधिष्ठरार्जुन शब्द से पुल्लिंग में प्रथमा द्विवचन में औ प्रत्यय होने पर युधिष्ठिरार्जुनौ रूप बना।

(7.5.6) ''संख्याया अल्पीयस्थाः'' (वार्तिक)

वार्तिकार्य–समास में अल्पसंख्यावाचक का पूर्व निपात कहना चाहिए।

वार्तिक व्याख्या–इस वार्तिक से पूर्वनिपात होता है। इस वार्तिक में संख्याया: और अल्पीयस्था: ये दो पद षष्ठी एकवचनान्त है। संख्याया: अल्पीयस्या: का अल्पसंख्यावाचक अर्थ है। ''उपसर्जनम् पूर्वम्'' यहाँ इस सूत्र से पूर्वम् पद की अनुवृत्ति आती है। एवं वार्तिक का अर्थ होता है–''समास में अल्पसंख्यावाचक पद का पूर्वनिपात कहना चाहिए।''

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण है–द्वादश। द्वौ च दश च इस लौकिक विग्रह में द्वि जस् दशन् जस् इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द समास होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर द्विदशन् स्थिति में प्रोक्त वार्तिक से अल्पसंख्या वाची द्विशब्द का पूर्व निपात होने पर द्विदशन् स्थिति में द्विशब्द के इकार का ''द्रव्यष्टन: संख्यायामबहुव्रीह्यशीत्यो:'' इस सूत्र से आकारान्तादेश होने पर द्वादशन् होता है न लोप प्रक्रियाकार्य में निष्पन्न द्वादश शब्द से जस् प्रत्यय होने पर द्वादश रूप बना।

पाठगत प्रश्न-3

24. ''अभ्यहितं च'' इस वार्तिक का क्या अर्थ होता है?
25. ''अभ्यहिंत च'' इस वार्तिक का उदाहरण क्या है?
26. ''वर्णानामानुपूर्व्येण'' वार्तिक का उदाहरण क्या है?
28. ''भ्रातुर्ज्यायस:'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?
30. ''संख्याया अल्पीयस्या:'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?
31. ''संख्याया अल्पीयस्या:'' इस वार्तिक का उदाहरण क्या है?

(7.3) ''द्वन्दश्च प्राणिधूर्यसेनाङ्गानाम्'' (2.4.2)

सूत्रार्थ–प्राणी अंगों का, तूर्थाङ्गों का और सेनाङ्गों का द्वन्द में एकवत् (एक समान) भाव होता है।

सूत्र व्याख्या–यह अतिदेश सूत्र है। इस सूत्र से एकवद् भाव दिखाई देता है। एकवत् (एकसमान) नाम एक में ही होना। अर्थात् एकवचनात्तता से प्रयोग होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में द्वन्द प्रथमा एकवचनात्त पद हैं। ''च'' अव्यय पद है। प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् यह षष्ठीबहुवचनान्त पद है। ''द्विगुरेकवचनम्'' इससे एकवचन पद की अनुवृत्ति होती है। प्राणी च तूर्यं च सेना च प्राणिततूर्यसेना: यह इतरेतर योगद्वन्द समास है। तासाम् अङ्गानि प्राणितूर्यसेनाङ्गानि, तेषां प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् यह षष्ठी तत्पुरुष समास है। ''द्वन्दात्ते श्रूयमाणं पदं प्रत्येकमनिसम्बध्यते'' इस न्याय से प्राणियों के अंग, तूर्य अंग, सेना के अंग प्राप्त होते है। एकं वक्ति इति (एक वचन) एकवचम् कर्ता में ल्युट् प्रत्यय प्राप्त होता है। ''समाहारग्रहणं कर्त्तव्यम्'' इस वार्तिक वन से समाहाररूप अर्थ के प्रातिपादित हो जिसमें द्वन्द समास प्राप्त होता है। एवं सूत्र अर्थ होता

है–''प्राणी अंगों के, तूर्य अङ्गों के, और सेना के अंगों का एकवत् भाव होता है।

उदाहरण–प्राणी अंग का उदाहरण है पाणिपादम्। पाणी च पादौ एषां समाहार: इस लौकिक विग्रह में प्राणि औ पाद औ इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से समाहारद्वन्द समास होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर पाणिपाद इस स्थिति में प्रोक्त सूत्र से प्राणीअंगद्वन्दत्व से पाणिपाद् द्वन्द का एकवत् भाव होता है। इसके बाद पाणिपाद शब्द से प्रथमा एकवचन में सु प्रत्यय होने पर ''स नपुंसकम्'' इससे समाहारद्वन्द का पाणिपादशब्द का नपुंसकत्व होता है। इसके बाद सु प्रत्यय का अम् होने पर ''अमिपूर्व:'' इससे दकार के अकार के अम् और अकार के स्थान पर पूर्वरूप होने पर अकार होने पर पाणिपदम् रूप होता है।

तूर्य अङ्गों का उदाहरण है–मार्दङ्गिकाश्च वैणविकाश्च इस समाहार इस विग्रह में मार्दङ्गिक वैणविकम्। सेनाङ्गानाम् उदाहरण है रधिकाश्च अश्वारिहाश्च एषां समाहार: इस विग्रह में रधि काश्वारोहम्।

(7.4) ''जातिरप्राणिनाम्'' (2.4.6)

सूत्रार्थ–प्राणिवर्जित जातिवाचकों का द्वन्द एकवत् भाव होता है।

सूत्र व्याख्या–षड्विधि पाणिनीयसूत्रों में यह अतिदेश सूत्र है। इस सूत्र से एकवद्भाव का अतिदेश हो रहा है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में जाति: प्रथमा एकवचनान्त है और अप्राणिनाम् षष्ठी बहुवचनान्त पद है। जाति: यहाँ पर षष्ठी बहुवचन स्थान पर व्यति प्रथमा विभक्ति है। जातिवाचिनाम् यही अर्थ है। अप्राणिनाम् का प्राणिवाचकवर्जितों का है। ''द्वन्दश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्'' इस सूत्र से द्वन्द पद की अनुवृत्ति होती है। ''समाहारग्रहणं कर्त्तव्यम्'' इस वार्तिक बल से समाहार रुपार्थ का प्रातिपदिक एषां द्वन्द समास प्राप्त होता है। एवं सूत्रार्थ होता है ''प्राणिवर्जित जातिवाचक का द्वन्द एकवत् होता है।''

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है–धानाशष्कुलि। धानाश्च शष्कुलयश्च तासां समाहार: इस लौकिक विग्रह में धाना जम् शष्कुलि जस् इस अलौकिक विग्रहे ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से समाहारद्वन्द समास होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिकत्व से ''सुपोधातुप्रातिपदिकपो:'' इस सूत्र से सुप् के दोनों जस् प्रत्ययों का लोप होने पर धानाशष्कुलि होता है। तत प्रोक्त सूत्र से प्राणिनिन्नशस्यजातिवाचक द्वन्द के धानाशब्कुलि का एकवत् भाव होता है। इसके बाद ध ानाशष्कुलि शब्द से सु प्रत्यय होने पर ''स नपुंसकम्'' इससे नपुंसकत्व होने से प्रक्रिया कार्य में धानाशब्कुलि रूप होता है।

(7.8) ''तेषां च विरोध: शाश्वतिक:'' (2.4.9)

सूत्रार्थ–जिनमें विरोध शाश्वतिक है उनमें एक द्वन्द एकवत् भाव होता है।

सूत्र व्याख्या–यह अतिदेश सूत्र है। इस सूत्र से एकवत् भाव का अतिदेश किया जाता है।

टिप्पणियाँ

त्रियदात्मक इस सूत्र में येषाम् षष्ठी बहुवचनान्त पद है। ''च'' अव्ययपद है। विरोधः शाश्वतिकः ये दोनों पद प्रथमा एकवचनान्त पद हैं। विवाधः बैर को कहते हैं। शाश्वतिक नाम सदा (हमेशा) का है। ''द्वन्दश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्'' इस सूत्र से द्वन्द पद की अनुवृत्ति होती है। ''द्विगुरेकवचनम्'' इससे एकवचन पद की अनुवृत्ति आती है। ''समाहारग्रहणं कर्त्तव्यम्'' इस वातिकबल से इनमें द्वन्द समास प्राप्त होता है। और सूत्रार्थ है–''येषां विरोधः शाश्वतिकः तेषां द्वन्द एकवत् भाव होता है।''

उदाहरण–इसका उदाहरण है अहिनकुलम्। अध्यश्च नकुलाश्च इस लौकिक विग्रह में अहि जस् नकुल जस् इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्दे:'' इस सूत्र से समाहार द्वन्द होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिकत्व होने में सु का लोप होने से प्रक्रिया कार्य में अहिनकुल होता है। अहिनकुलयोः विरोधयोः सुप्रसिद्धत्व से प्रोक्त सूत्र से दोनों का द्वन्द के एकवद् भाव होता है। इसके बाद अहिनकुलशब्द से सु प्रत्यय होने पर ''स नपुंसकम्'' इससे नपुंसकत्व प्राप्त होने पर सु का अम् होने पर प्रक्रिया कार्य में अहिन कुलम् रूप बना।

(7.9) ''विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि'' (2.4.13)

सूत्रार्थ–विरुद्वार्थों का अद्रव्यवाची द्वन्द एकवत् विकल्प से होता है।

सूत्र व्याख्या–यह अतिदेश सूत्र है। इस सूत्र से एकवत् भाव का अतिदेश होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में विप्रतिषिद्धम् अनधिकरणवाचि ये दो पद प्रथमा एकवचनान्त रूप है। ''च'' अव्यय पद है। ''विभाषा'' इसकी अनुवृत्ति होती है। विप्रतिषेधो विरोधः के साथ अवस्थान लक्षण है। अधिकरण द्रव्य है। न अधिकरण अनधिकरण नाम अद्रव्य है। ''द्वन्दश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्'' इस सूत्र से द्वन्द पद की अनुवृत्ति होती है। ''द्विगुरेकवचनम्'' इससे एकवचन पद की अनुवृत्ति होती है। ''समाहार ग्रहणं कर्त्तव्यम्'' इस वार्तिक बल से इनका द्वन्द समास प्राप्त होता है। एवं सूत्रार्थ होता है–''विरुद्ध अर्थवाची अद्रव्यवाची शब्दों का द्वन्द एकवत् विकल्प से होता है।''

उदाहरण–इसका उदाहरण है शीतोष्ण। शीतं च उष्णं च इस लौकिक विग्रह में शीत सु उष्ण सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से समाहारद्वन्द समास होता है। इसके बाद समास का प्रातिपदिकत्व से ''सुपो धातु प्रातिपदिकयोः'' इससे सुप् के दो सु प्रत्ययों का लोप होता है। शीत उष्ण इस स्थिति में गुण होने पर शीतोष्ण शब्द होता है। शीतोष्ण यहाँ अद्रव्यवाची विरुद्ध दोनों अर्थों में द्वन्द से उन दोनों में द्वन्द का प्रोक्त सूत्र (विप्रतिषिद्धंचानधि करणवाचि) से विकल्प से एकवत् भाव होता है। इसके बाद शीतोष्ण शब्द से सु प्रत्यय होने पर ''स नपुंसकम्'' इससे नपुंसकत्व प्राप्त होने पर प्रक्रिया कार्य में शीतोष्ण रूप बना। एकवत् भाव का विकल्पता के अभाव पक्ष में औ प्रत्यय होने पर शीतोष्णे रूप बना।

पाठगत प्रश्न-4

32. ''द्वन्दश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

33. ''द्वन्दश्च प्राणिसूर्यसेनाङ्गानाम्'' इस सूत्र से प्राणी अङ्गों का एकवत् भाव का उदाहरण दीजिये?

34. ''द्वन्दश्च प्राणिसूर्यसेनाङ्गानाम्'' इस सूत्र से तूर्यअङ्गों के एकवत् भाव होने का उदाहरण क्या है?

35. ''द्वन्दश्च प्राणिसूर्यसेनाङ्गानाम्'' इस सूत्र से सेनाङ्ग के नामों के एकवत् भाव होने का उदाहरण दीजिये?

36. ''जातिरप्राणिनाम्'' सूत्र का क्या अर्थ है?

37. ''जातिरप्राणिनाम्'' सूत्र का उदाहरण क्या है?

38. ''येषां च विरोधः शाश्वतिकः'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

39. ''येषां च विरोध शाश्वतिकः'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

40. ''विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

41. ''वि प्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

(7.10) ''आनङ्ऋतो द्वन्दे'' (6.3.25)

सूत्रार्थ–द्वन्द में विद्यायोनिसम्बन्धवाची ऋदन्त उत्तरपद परे आनङ् होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से आनङ् होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में आनङ् प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''ऋतः'' षष्ठी एकवचनान्त् पद है। ''द्वन्दे'' यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। ''अलुगुत्तरपदे'' इससे उत्तरपदे की अनुवृत्ति होती है।

''ऋतो विद्यायोनिसम्बन्धेभ्यः'' इस सूत्र से विद्यायोनिसम्बन्धेम्यः पद की अनुवृत्ति होती है। और च पद षष्ठयन्तता विपरिणाम होने पर है। ऋतः यहाँ तदन्तविधि में ऋदन्तानाम् पद प्राप्त होता है। एवं सूत्रार्थ होता है–''द्वन्द समास में विद्यायोनिसम्बन्धवाची ऋदन्तों के उत्तरपद परे आनङ् होता है।''

और यह आनङ् आदेश ङित्व होने से ''ङिच्च'' की परिभाषा से अन्त्य के अल के ही स्थान पर ही होता है।

उदाहरण–विद्यासम्बन्धवाची होने का उदाहरण है होतापोतारौ।। होता च पोता च इस लौकिक विग्रह में होतृ सु पोतृ सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से इतरेतरद्वन्द समास होता है। इसके बाद समास का प्रातिपदिकत्व होने से सुप् का लोप होने पर होतृ पोतृ होता है। विद्यासम्बन्धवाची ऋदन्त होतृ शब्द का पोतृ के उत्तरपद परे ''ङिच्च'' इस परिभाषा से परिष्कृत प्रोक्तसूत्र से ऋकार के आनङ् **होत् आनङ् पोत्** होता है। आनङ् के ङकार के ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोपः'' इससे लोप होने पर नकार और अकार के उच्चारर्थकत्व से होतान् पोतृ रूप होता है। तब ''न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य'' इससे होतान् यहाँ

टिप्पणियाँ

अन्त्य के नकार का लोप होने पर होता पोतृ शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद प्रथमा द्विवचन की विवक्षा में औ प्रत्यय होने पर होतापोतारौ रूप बना।

इसी प्रकार योनिसम्बन्धवाची उदाहरण है। ''मातापितरौ। माता च पिता च इस लौकिक विग्रह में मातृ सु पितृ सु इस स्थिति में नकार अकार के उच्चारणर्थकत्वता से होतान् पोतृ होता है। तब ''न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य'' इसमें होतान् यहाँ अन्त्य के नकार का लोप होने पर होता पोतृ शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद प्रथमाद्विवचन की विवक्षा में औ प्रत्यय होने पर होता पोतारौ रूप बना।

इसी प्रकार योनि सम्बन्धवाची उदाहरण है। माता पितरौ माता च पिता च इस लौकिक विग्रह में मातृ सु पितृ सु इस अलौकिक विग्रह में इतरेतरद्वन्द समास होने पर प्रक्रिया कार्य में मातृ पितृ स्थिति में प्रोक्त सूत्र से मातृशब्द के ऋकार का आनङ् प्रक्रिया कार्य में मातापितरौ रूप बना।

इसी प्रकार योनिसम्बन्धवाची का उदाहरण है–मातापितरौ। माता च पिता च इस लौकिक विग्रह में मातृ सु पितृ मु इस अलौकिक विग्रह में इतरेतरद्वन्द समास में प्रक्रिया कार्य में मातृ पितृ इस स्थिति में प्रोक्तसूत्र से मातृशब्द के ऋकार का आनड़् होने पर प्रक्रिया कार्य में माता पितरौ रूप बना।

माता पितरौ यहाँ इतरेतरद्वन्द समास है। और उस समास का अपवाद है एकशेषः। उस एकशेष के विधान के लिए प्रवृत्त है।

(7.11) ''पिता मात्रा'' (1.2.70)

सूत्रार्थ–मातृशब्द से सह उक्त पितृशब्द विकल्प से अवशेष होता है। (मातृशब्द के साथ पितृशब्द द्वन्द में पितृशब्द ही विकल्प से शेष रहता है)

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से द्वन्द समास के अपवाद एकशेष का विधान का विधान है। द्वि पदात्मक इस सूत्र में पिता प्रथमा एकवचनान्त पद है। माता तृतीया एकवचनान्त पद है। ''सकपाणामेक शेष एक विभक्तौ'' इस सूत्र से शेषः पद की अनुवृत्ति होती है। ''नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चास्यान्यतरस्याम्'' इस सूत्र से अन्यतरस्याम् पद की अनुवृत्ति होती है। और सूत्रार्थ है–''मातृशब्द से सह उक्त पितृशब्द विकल्प से अवशेष रहता है।''

(7.12) ''देवताद्वन्दे च''

सूत्रार्थ–देवतावाची द्वन्द समास में उत्तरपद परे आनङ् होता है।

सूत्र व्याख्या–षड्विधि पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से आनङ् होता है। द्विपदात्मक सूत्र में ''देवताद्वन्दे'' यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। ''च'' अव्ययपद है। चकार से ''आनङ्ऋतो द्वन्दे'' इस सूत्र से आनङ् का ग्रहण होता है। ''अनुगुत्तरपदे'' इससे उत्तरपदे

की अनुवृत्ति आती है। देवतानां द्वन्दं देवताद्वन्दं तस्मिन् षष्ठीतत्पुरुष समास है। देवता शब्द से देवतावाची शब्दों का ग्रहण किया गया है।

और सूत्रार्थ होता है–''देवतावाची द्वन्द समास में उत्तरपद परे आनङ् होता है। और यह आनङ् आदेश ङित्व होने से ''ङिच्च'' परिभाषा से अन्त्य के अल ही स्थान पर होता है।

उदाहरण–मित्रावरुणौ इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है। मित्रश्च वरुणश्च इस लौकिक विग्रह में मित्र सु वरुण सु इस लौकिक विग्रह में मित्र सु वरुण सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से इतरेतर द्वन्द समास होता है इसके बाद समास का प्रातिपदिकत्व होने से सु का लोप होने पर मित्रवरुण होता है। देवतावाची द्वन्दत्व से उत्तरपद वरुणशब्द परे ''ङिच्च'' परिभाषा से परिष्कृत प्रौक्त सूत्र से मित्र यहाँ पर र के अकार का आनङ् होने पर मित र् आनङ वरुण होता है। इसके बाद ङकार का ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संग होने पर ''तस्य लोप:'' इससे लोप होने पर नकार के अकार के उच्चारण के लिए और कत्व होने से मित्रान् वरुण होता है। तब ''न लोप: प्रातिपदिकान्तस्य'' इससे भिञान् के नकार का लोप होने पर निष्पन्न मित्रावरुण शब्द से प्रथमाद्विवचन की विवक्षा में औ प्रत्यये होने पर मित्रावरुणौ रूप हुआ।

(7.13) ''द्वन्दाच्चुदषहान्तात्समाहारे''

सूत्रार्थ–चवर्गान्त और दषहान्त से द्वन्द समास समाहार में समासान्त तद्धितसंज्ञक टच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त टच् प्रत्यय होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में द्वन्दात् चुदषहान्तात् समाहारे'' यह पदच्छेद है। द्वन्दात् चुदषहान्तात् ये दो पद पञ्चमी एक वचनान्त पद हैं। समाहारे यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। चुश्च दश्च षश्च हश्च एषां समाहार: चुदषहम् यह समाहार द्वन्द है। चुदषहम् अन्ते यस्थ स चुदषहान्त, तस्मात् चुदषहान्तात् यहाँ बहुव्रीहि समास है। ''राजाह: सखिभ्यष्टच्'' इस सूत्र से टच् की अनुवृत्ति आती है। ''प्रत्यय:'', ''परश्च'', ''तद्धिता:'' ''समासान्ता:'' ये अधिकृत सूत्र हैं। चु शब्द से च वर्ग का ग्रहण है। दषहति इत्यत्र अकार उच्चारणार्थक है। एवं सूत्रार्थ होता है–चर्वर्गान्त और दषहान्त से द्वन्द समाहार में समासान्त तद्धित संज्ञक टच् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–च वर्गान्त से टच् का उदाहरण है। वाक्त्वचम्। वाक् च त्वक् च अनथो: समाहार: इस लौकिक विग्रह में वाच् सु त्वच् सु इस अलौकिक विग्रह में ''चार्थेद्वन्द:'' इस सूत्र से समाहारद्वन्द समास होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर वाच् त्वच् होता है। इसके बाद अन्तर्वर्तिनी विभक्ति को आश्रित करके ''चो: कु:'' इससे वाच् का चकार का कुन्त्व होने पर ककार होने पर वाक् त्वच् होता है। चवर्गान्तत्वाद् वाक्त्वच् समाहार द्वन्द के प्रोक्त सूत्र से टच् प्रत्यय होने पर वाक्वच् टच् होता है। टच् के टकार का ''चुटू'' सूत्र से और चकार का ''हलन्त्यम्'' से इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोप:'' इससे लोप होने पर वाक्त्वच् अ होता है। तब सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न वाक्त्वच् शब्द से ''स नपुंसकम्'' इससे नपुंसक के विद्यमान होने से सु प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में वाक्त्वचम् रूप बना।

दकारान्त से टच् प्रत्यय का उदाहरण है शमी च दृषत् चानयोः समाहारः समीदृषदम्। षकारान्त से टच् प्रत्यय का उदाहरण है वाक् च त्विट् च आनयोः समाहार वाक्त्विषम्। हकारान्त टच् प्रत्यय का उदाहरण है छात्रं च उपानत् चानयोः समाहारः **छात्रोपानहम्।**

पाठगत प्रश्न-5

42. ''आनङृतोद्वन्दे'' यह किस प्रकार का सूत्र है।

43. ''आनङ्ऋतोद्वन्दे'' इस सूत्र का अर्थ है?

44. ''आनङ्ऋतोद्वन्दे'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

45. ''पिता मात्रा'' इस सूत्र से क्या विधान होता है?

46. ''पिता मात्रा'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

47. ''पिता मात्रा'' इस सूत्र का उदाहरण कौन सा है?

48. ''देवता द्वन्दे च'' इस सूत्र से क्या विधान है?

49. ''देवताद्वन्दे च'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

50. ''देवताद्वन्दे च'' इस का क्या उदाहरण है?

51. ''द्वन्दाच्चुषद बहान्तात्समाहारे'' इस से क्या विधान होता है?

52. ''द्वन्दाच्चुदषहान्तात्समाहारे'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

54. ''द्वन्दाच्चुदषहान्तात्समाहारे'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

पाठ सार

इस पाठ में द्वन्दसमास प्रस्तुत किया गया है। बहुव्रीहि समास से पर समास का भेद होता है। द्वन्द। ''चार्थेद्वन्दः'' इस द्वन्द समास विधायक सूत्र है। प्राय उभयपदार्थ प्रधान यह समास है। द्वन्द समास इतरेतरद्वन्द समाहार द्वन्द समास दो भेद है। यहाँ ''चार्थेद्वन्दः'' इस के व्याख्यानवसर पर (चार्थाः) च के अर्थ प्रतिपादित किया गया है। समुच्चयः, अन्वाचयः, इतरेतरयोग और समाहारः ये ''च'' के अर्थ हैं। परस्पर निरपेक्ष अनेकपदों का यहाँ एक क्रियापद में अन्वय होता है वहाँ समुच्चय च का अर्थ है। अन्यतर एक पद का जहाँ अद्यानत्व से किया का अन्वय होता है और अन्य के प्रधानत्व से वहाँ च का अर्थ होता है। परस्पर आक्षेपित समुदित एक क्रियापद में अन्वय है यत्र तत्र च का अर्थ इतरेतरयोग है। एकीमूय (एक होकर) क्रिया में अन्वय जहाँ तहाँ च का अर्थ हो वह समाहार है। समुच्चय में और अन्वाचय में सामर्थ्य के अभाव से समास नहीं होता है। किन्तु इतरेतर योग का और समाहार का च का अर्थ का सामर्थ्यसत्त्व से समास होता है। एवं ''चार्थेद्वन्द'' इस सूत्र से इतरेतर योग में और समाहार में द्वन्द समास होता है।

इसके बाद ''राजदन्तादिषु परम्'' यह पूर्व निपात विधायक सूत्र प्रस्तुत किया गया है। तत् विषयकता से ''धर्यादिष्वनियमः'' इस वार्तिक की व्याख्या की गई है। इसके बाद द्वन्द में द्विसंज्ञक पूर्व प्रयोग विधायक ''द्वन्दे धि'' सूत्र की व्याख्या की गई है। इसके बाद ''अनेकप्राप्तावकेत्र नियमोऽनियमः शेषे'', ''ऋतुनक्षत्राणां समाक्षराणामानुपूर्व्येणं, ''लघ्वक्षरं पूर्वम्'', ''अभ्यर्हित च'', ''वर्णानामानुपूर्व्येण'' ''भ्रातुर्ज्यायसः'', ''संख्याया अल्पीयस्थाः'' इस पूर्वनिपात विधायक वार्तिक की व्याख्या की गई है।

इसके बाद द्वन्द में एकवत् भाव विधायक सूत्र ''द्वन्दश्चप्राणितूर्य सेनाङ्गानाम्'', ''जातिरप्राणिनाम्'', ''येषां च विरोधः शोश्वतिकः'' इन सूत्रों की व्याख्या की गई है।

द्वन्दसमासप्रसङ्ग में मातापितरौ यहाँ उत्तरपद परे आनङ् विधायक ''आनङ्ऋतो द्वन्दे'' इस सूत्र की भी व्याख्या की गई है। और यहाँ द्वन्द के अपवाद एक शेष का विधायक ''माता-पिता'' सूत्र की भी व्याख्या की गई है। मित्रावरुणौ इत्यादि आनङ् आदेश विधायक ''देवताद्वन्दे च'' सूत्र को प्रातिपादित किया गया है। इसके बाद समासान्त ट्च प्रत्यय का विधायक सूत्र ''द्वन्दाच्चुदषहान्तात्समाहारे'' सूत्र को प्रतिपादित किया गया। और द्वन्दसमास इस पाठ में प्रतिपादित है।

पाठान्त प्रश्न

1. ''चार्थे द्वन्दः'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिये?
2. ''द्वन्दे धि'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
3. ''द्वन्दश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
4. ''विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि'' इस सूत्र की व्याख्या करो?
5. ''येषां च विरोधः शाश्वतिकः'' इस सूत्र की व्याख्या करो?
6. ''द्वन्दाच्चुदषहान्तात्समाहारे'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिये?
7. चार्थ कौन-कौन से है? उनका विवरण दीजिये?
8. ''द्वन्दे पूर्व निपातः'' इस विषय को आश्रित करके टिप्पणी लिखो।
9. समाहारद्वन्द में एकवद्भाव विषय को आश्रित करके टिप्पणी लिखो?
10. धवखदिरौ रूप को सिद्ध कीजिये।
11. पाणिपादम् रूप को सिद्ध कीजिये।
12. शीतोष्णम् रूप को सिद्ध कीजिये?
13. अहिनकुलम् रूप को सिद्ध कीजिये?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. अनेक सुबन्त को चार्थ में अथवा वर्तमान को समास होता है।
2. समुच्चय, अन्वाचय, इतरेतरयोग और समाहार च अर्थ हैं।
3. परस्परनिरपेक्ष अनेकपदों का जहाँ एक क्रिया पद में अन्वय होता है वहाँ समुच्चय चार्थ है। उदाहरण:–ईश्वरं गुरुं च भजस्व।
4. अन्थतर एकपद का जहाँ अप्रधानत्व से क्रिया में अन्वय और अन्य का प्रधानत्व से चार्थ अन्वाचय:। पिक्षाम् अट् गां च आनय।
5. परस्पर आक्षेपित समुदित एकक्रिया पद में अन्वय होता है जहाँ-वहाँ चार्थ इतरेतरयोग है। धवखदिरौ यह उदाहरण है।
6. एक होकर (एकीकृत) क्रिया में अन्वय यहाँ वहाँ चार्थ समाहार है उदाहरण–पाणिपादम्।
7. परस्पर अन्वय अभाव से।
8. राजदत्तादिषु पूर्वप्रयोगार्हं को पर हाता है।
9. राजदन्त:।
10. धर्मादिषु समस्यमानों का अभ्यतर का पूर्वनिपात अथवा परनिपात होता है।
11. अर्द्य धर्मौ, धर्मार्थौ उदाहरण है।
12. द्वन्द में धि संज्ञक का पूर्व प्रयोग होता है।
13. हरि शब्द धि संज्ञक है अत: उसका पूर्वनिपात होता है।

उत्तर-2

14. अनेक घिसंज्ञक पदों को द्वन्द प्राप्त होने पर एक घिसंज्ञक का पूर्वनिपात नियम है, अन्य घिसंज्ञक विषय में पूर्व निपात का विकल्प होता है।
15. इस वार्तिक का उदाहरण है हरिगुकहरा:, हरिहरमुख:।
16. द्वन्द में जो अजादि और अदत्त है उसको पूर्वयोग होता है।
17. ईशकृष्णौ।
18. द्वन्द में अल्प अचक्का पद पूर्व प्रयोग होता है।

19. शिवकेशवौ।

20. समानसंख्यावाची ऋतुओं का और नक्षत्रों का द्वन्द में आनुपूर्ल्य से क्रम से निपात कहना चाहिए।

21. हेमन्तशिशिरवसन्ताः।

22. लघु अक्षर पद को द्वन्द समास में पूर्व प्रयोग होना चाहिए।

23. कुशकाशम्।

उत्तर-3

24. अभ्यहित पद को द्वन्द में पूर्व प्रयोग करना चाहिए।

25. वासुदेवार्जुनौ।

26. द्वन्द में वर्णों के आनुपूर्व्य से पूर्वनिपात कहना चाहिए।

27. ब्राह्मणक्षत्रियविट्शुद्राः।

28. द्वन्द में ज्येष्ठभातृवाचक पद का पूर्वनिपात कहना चाहिए।

29. सुधिष्ठिरार्जुनौ।

30. समास में अल्पसंख्यावाचक का पूर्व निपात कहना चाहिए।

31. द्वादश।

उत्तर-4

32. प्राणि अंगों का, तूर्य अंगों का और सेना के अंगों का एकवद् भाव होता है।

33. पाणिपादम्।

34. मार्दङ्गिकपाणविकम्।

35. रथिकाश्वहरोम्।

36. प्राणिवर्जित जातिवाचक द्वन्द का भाव होता है।

37. धानाशष्कुलि।

38. येषां विरोधः शाश्वतिकः तेषां द्वन्द एक वद्भाव भवति। (जिनमें विरोध शाश्वत हो उनका द्वन्द में एकवत् भाव होता है।)

39. अहिनकुलम्।

टिप्पणियाँ

40. विरुद्धवाची अद्रव्यवाची द्वन्द का एकवत् भाव विकल्प से होता है।

41. शीतोष्णम्।

उत्तर-4

42. विधिसूत्र।

43. विद्या, योनि, सम्बन्धवाची ऋदन्त उत्तरपद परे आनङ् होता है।

44. होतापोतारौ।

45. द्वन्द समास का अपवाद है एकशेष।

46. मातृशब्द के साथ उक्त में पितृशब्द विकल्प से अवशिष्ट होता है।

47. पितरौ।

48. आनङ्।

49. देवतावाची द्वन्द समास में उत्तरपद परे आनङ् होता है।

50. मित्रावरुणौ।

51. समासान्त टच् प्रत्यय का विधान होता है।

52. चवगन्ति और दषहान्त से द्वन्द से समाहार में तद्धित संज्ञक टच् प्रत्यय होता है।

53. शमीदृषम्।

सप्तम पाठ समाप्त